प्रस्तावना

भाषा वह साधन है जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचारों को प्रकट करता है और दूसरों के विचारों को समझ सकता है। दुनिया का अधिकांश व्यवहार बोलचाल अथवा लेखन से चलता है। इसीलिए ‘कामता प्रसाद गुरु’ ने **भाषा** को जगत व्यवहार का मूल माना है

भाषा के द्वारा मनुष्य केवल एक दूसरे के विचारों को ही नहीं जान लेता बल्कि उसकी सहायता से उनके नए विचार भी उत्पन्न होते हैं। किसी विषय को सोचते समय हम एक प्रकार का मानसिक संभाषण करते हैं। जिससे हमारे विचार आगे चलकर भाषा के रूप में आते हैं, इसके सिवा भाषा से ग्रहणशक्ति की सहायता भी मिलती है यदि हम अपने विचारों को एकत्र करके लिख लें तो आवश्यकता पड़ने पर भी हमें उनका स्मरण हो सकता है। भाषा की उन्नत या अवनत राष्ट्रीय उन्नति या अवनति का प्रतिबिंब है। प्रत्येक नया शब्द एक नए विचार का चित्र है और भाषा का इतिहास मानों बोलने वालों का इतिहास है।

भाषा स्थिर नहीं रहती है उसमें सदा परिवर्तन होता है। विद्वानों का अनुमान है कि कोई भी प्रचलित भाषा एक हजार वर्ष से अधिक समय तक एक-सी नहीं रह सकती, जो मराठी भाषा आजकल बोली जा रही है। वह आदि में ठीक इसी रूप में नहीं बोली जाती थी।भविष्य में न ही इसका यही रूप होगा।

भाषा में यह परिवर्तन धीरे-धीरे होता है। इतने धीरे-धीरे कि वह हमें मालूम नहीं होता पर अंत में परिवर्तनों के कारण नई-नई भाषाएँ उत्पन्न हो जाती हैं। भाषा जब एक सीमित क्षेत्र से दूसरे सीमित क्षेत्र में प्रयुक्त होती है तब उसमें परिवर्तन दिखाई देता है, इस परिवर्तन से ही भाषा परिवर्तनशील होती है क्योंकि भाषा में परिवर्तन ही उसका विकास है। वऱ्हाडी बोली महाराष्ट्र के प्रमुख बोलियों में से विदर्भ की प्रमुख एक बोली है । वऱ्हाडी बोली में बहुत सारे शब्द हिंदी के पाए जाते हैं, जैसे-

हिंदी शब्द	वऱ्हाडी शब्द	मानक मराठी शब्द
1. कोशिश	कोसीस	प्रयत्न
२. जवाब	जाब	प्रश्न
३. किस्सा	खिस्सा	कथा,कहाणी

प्रस्तुत शोध हिंदी के इन्हीं आगत शब्दों का भाषावैज्ञानिक अध्ययन प्रस्तुत करना है ।

शोध का उद्देश्य

1. प्रस्तुत लघु-शोध प्रबंध का मुख्य उद्देश्य वऱ्हाडी बोली में आगत हिंदी शब्दों का भाषावैज्ञानिक अध्ययन प्रस्तुत करना है।

1- विदर्भ बोली से अवगत कराना।
2- वऱ्हाडी बोली से अवगत कराना।
3- मराठी बोली से अवगत कराना।
4- महाराष्ट्र के विदर्भ प्रांत में प्रयुक्त की जानेवाली वऱ्हाडी के भाषाई क्षेत्र को दर्शाना।।

परिकल्पना

मराठी महाराष्ट्र राज्य की एक प्रमुख भाषा है। जो महाराष्ट्र के सभी प्रांतों में बोली और लिखी जाती है। लिखित रूप में इसका प्रयोग हर प्रांत में एक जैसा है लेकिन मौखिक रूप में यह अलग-अलग प्रांतों में अलग – अलग रूप से बोली जाती है। विदर्भ प्रांत की भी बोली भिन्न रूप से बोली जाती है इनमें बोली वऱ्हाडी विदर्भ प्रांत में प्रयुक्त की जानी वाली मराठी की एक प्रमुख बोली है। जिसका प्रयोग अमरावती, वाशिम, अकोला, बुलढाणा जिले में किया जाता है। महाराष्ट्रके विदर्भ प्रांत में प्रयुक्त की जाने वाली बोली वऱ्हाडी मानक मराठी से बहुत अलग है। विदर्भ में प्रयुक्त की जाने वाली सभी बोलियों पर हिंदी का प्रभाव दिखाई देता है। इसका कारण वऱ्हाडी बोली के शब्दों में हिंदी आगत शब्द दिखाई देते हैं लेकिन इस तरह आगत हिंदी शब्द मानक मराठी में नहीं दिखाई देते हैं।

1- ध्वनिस्तर पर परिवर्तन

जैसे **हिंदी भाषा**	**वऱ्हाडी बोली**
1. नतीजा	नतीज्या
2. लापता	लापत्ता
3. बोर	बोअर

वऱ्हाडी बोली में आगत हिंदी शब्द के ध्वनि स्तर पर कुछ स्वर, व्यंजन के आगम की वजह से शब्द में परिवर्तन हुआ है। जैसे - हिंदी शब्द नतीजा का वऱ्हाडी बोली नतीज्या हुआ है इसमें 'या'

व्यंजन का आगम हुआ है। वैसे ही लापता का लापत्ता में 'त' का आगम, बोर का बोअर में 'अ' का आगम हुआ है।

2) रूपस्तर पर परिवर्तन –

हिंदी शब्द	**वऱ्हाडी बोल**	**पर प्रत्यय**
1. खोलना	खोलने	ए
2. घुसना	घुसने	ए

रुप स्तर पर वऱ्हाडी बोली में आये आगत हिंदी शब्दों का अध्ययन करते समय पर प्रत्यय में परिवर्तन से खोलना का खोलने और घुसना का घुसने में 'आ' का 'ए', हो गया है।

3) शब्दस्तर पर परिवर्तन

हिंदी शब्द	**वऱ्हाडी शब्द**	**मानक मराठी**
1 . कतार	कतार	रांग
2 . कसम	कसम	शपथ
3 . कसूर	कसूर	गुन्हा
4 . खतरा	खतरा	धोका
5 . खराब	खराब	वाईट
6. खुद	खुद	स्वत

4) वाक्यस्तर पर परिवर्तन

मानक मराठी	**वऱ्हाडी बोली**
1- **आत**मध्ये कोण आहे।	**अंदर** कोण हाय।
2- सचिन किती **हैरान** आहे।	सचिन किती **परेसान** हाय।

इस प्रकार के वाक्यों में हिंदी शब्द वऱ्हाडी बोली में आ रहे हैं। इससे मानक मराठी कौन-सी है और हिंदी शब्द कौन-सा है ये समझ पाना मुश्किल है। वऱ्हाडी बोली से परिचित कराकर जो आगत हिंदी शब्द वऱ्हाडी बोली में आये हैं वे कैसे आए हैं। ध्वनि स्तर, रूपस्तर, शब्द स्तर, वाक्य स्तर पर कैसे परिवर्तन हुआ है यह प्रस्तुत शोध का विषय है।

शोध की सीमाएँ

प्रस्तुत शोध की सीमाएँ हैं -

1) प्रस्तुत शोध वऱ्हाडी बोली तक सीमित रहेगा।

2) विदर्भ प्रांत में प्रयुक्त की जानेवाली वऱ्हाडी के भाषाई क्षेत्र तक सीमित रहेगा।

शोध प्रविधि

शोध में प्रविधि की महत्वपूर्ण भूमिका होती है क्योंकि प्रविधि के आधार पर ही शोधार्थी वैज्ञानिक पदधति से निष्कर्ष तक पहुँच पाता है। प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध में एक से ज्यादा प्रविधियों को अपनाया गया है। इस शोध में मुख्य रूप से तुलनात्मक और विश्लेषणात्मक प्रविधि का उपयोग किया गया। जिसके लिए प्राथमिक और द्वितीय प्रकार का तथ्य संकलन किया गया है।

प्रस्तुत शोध की प्रविधि विश्लेषणात्मक है। इसके अंतर्गत वऱ्हाडी, मराठी, और हिंदी शब्दों का विश्लेषण किया गया है। यह विश्लेषण ध्वनि, रूप, शब्द और वाक्य के आधार पर किया है।

अध्याय –विन्यास

शोध- कार्य की व्यवस्थित प्रस्तुति के लिए इसे पाँच अध्यायों में विभक्त किया गया है-

प्रथम अध्याय में 'मराठी भाषा और उसकी बोलियाँ'' को संक्षेप में बताया गया हैं। इसके अंतर्गत परिचय एवं भाषाई क्षेत्र, मराठी की विभिन्न बोलियाँ, वऱ्हाडी बोली का इतिहास एवं भाषाई क्षेत्र, वर्ण प्रक्रिया एवं प्रत्यय प्रक्रिया, वाक्यरचना को बताने का प्रयास किया गया है।

दूसरे अध्याय में 'वऱ्हाडी बोली की व्याकरणिक संरचना' के अंतर्गत मुख्य शब्द-भेद, व्याकरणिक कोटियाँ, अन्य पक्ष के आधार पर विश्लेषण किया गया है।

तीसरे अध्याय में 'वऱ्हाडी बोली में आगत हिंदी शब्दों का ध्वनि स्तर पर और रूप स्तर पर भाषावैज्ञानिक अध्ययन' में आगम, लोप ,विकार , विपर्यय और विषमीकरण के आधार पर ध्वनि-परिवर्तन दिखाया गया है और रुप-परिवर्तन के अंतर्गत प्रत्यय के अध्ययन विश्लेषण किया गया है।

चतुर्थ अध्याय के अंतर्गत 'वऱ्हाडी बोली में आगत हिंदी शब्दों का शब्द और वाक्य स्तर पर भाषा वैज्ञानिक अध्ययन' करने का प्रयास किया गया है।

इन समस्त बिंदुओं पर विचार करने के लिए विभिन्न पुस्तकों तथा आलेखों का सहारा लिया गया है। शोध-कार्य के तृतीय और चतुर्थ अध्याय के तहत प्राप्त तथ्यों का विश्लेषण करते हुए अंत में संदर्भ-सूची प्रस्तुत की गई है। यह शोध –कार्य अपनी सीमाओं एवं त्रुटियों के साथ आपके समक्ष प्रस्तुत है। आशा है मेरा यह कार्य इस दिशा में किए जा रहे कार्यों में कुछ बिंदुओं को जोड़ सकेगा। कार्य की समय –सीमा और मेरी क्षमता को देखते हुए विद्वतजन इस संबंध में मेरे द्वारा की गई भूलों को माफ कर मुझे सुझाव देंगे, ऐसी आशा है।

साहित्य पुनरावलोकन

इस शोध-कार्य को संपन्न करने के लिए विभिन्न सहायक –सामग्री की सहायता ली गई है। जिनमें मराठी –हिंदी की पुस्तकें, शोध –आलेखों का पुनरावलोकन किया गया है। जिसका विवरण प्रस्तुत है –

हिंदी में उपलब्ध पुस्तकों का वर्णन

1) मालशे डॉ.स.ग., अंजली डॉ सोमन, पुंडे डॉ. द. दि, 'भाषाविज्ञान परिचय' पध्यगंधा प्रकाशन पुणे,(2003)

मालशे ने इस किताब में भाषा का स्वरूप और उसका उपयोग, मानक भाषा और बोली, मराठी की प्रमुख बोलियाँ और मराठी के शब्द संग्रह के बारे में बताया है। इसमें 'मराठी की प्रमुख बोलियों' के अंतर्गत मराठी की बोलियाँ अहिरणी, वऱ्हाडी, कोंकणी बोलियों के उच्चारप्रक्रिया, व्याकरणिक प्रक्रिया, और अपरिचित शब्दों को दिखाया है इससे मानक मराठी और वऱ्हाडी बोली में अंतर दिखाई देता है। वऱ्हाडी बोली में हिंदी के प्रभाव से जो हिंदी शब्द आए हैं उसका विश्लेषण इस लघु शोध कार्य में किया गया है।

2) सोटे देविदास 'वैदर्भीय बोली कोश' सोटे साहित्य प्रकाशन, वर्धा (1974)

देविदास सोटे ने इस किताब के अंतर्गत विदर्भ प्रांत की स्थिति और उसका इतिहास बताते हुए मानक मराठी , वऱ्हाडी बोली और उस शब्द की उत्पत्ति को दिखाया है , इसके साथ वैदर्भीय मुहावरे को भी दिखाया है। इस वैदर्भीय बोली कोश के अंतर्गत अरबी , फारसी , संस्कृत, हिंदी, उर्दू के शब्द वऱ्हाडी बोली में कैसे आए हैं इसको समझाया है। यह कोश है जिससे इस लघु शोध में वऱ्हाडी बोली में आए हिंदी शब्दों को लेकर मैंने ध्वनि, रूप ,शब्द और वाक्य को लेकर विश्लेषण किया है।

3) कुलकर्णी आरती 'भाषाविज्ञान : संकल्पना एवं स्वरूप' विजय प्रकाशन, नागपुर 2009,)

इन्होंने इस किताब में मराठी भाषा की स्वनप्रक्रिया के बारे में बताया है। स्वनप्रक्रिया में मराठी और वऱ्हाडी बोली के स्वर , व्यंजन, सर्वनाम, काल, लिंग, प्रत्यय की संरचना के बारे में इस प्रकार बताया है।

4) जलज डॉ. जयकुमार 'ऐतिहासिक भाषाविज्ञान' भारतीय ग्रंथ प्रकाशक नई दिल्ली,(2001)

जयकुमार जलज ने अपनी पुस्तक में ऐतिहासिक भाषाविज्ञान की उत्पत्ति बताते हुए उन्होंने वर्णनात्मक, तुलनात्मक और ऐतिहासिक भाषाविज्ञान का अध्ययन प्रस्तुत किया है साथ ही ध्वनि-परिवर्तन, रूप –परिवर्तन, वाक्य-परिवर्तन, अर्थ-परिवर्तन विषय में महत्वपूर्ण विचार दिए हैं। इसमें उन्होंने आंतरिक और बाह्य कारणों की वजह से ध्वनि –परिवर्तन हुआ है, स्पष्ट किया है रूप –स्तर पर अर्थतत्व और संबंधतत्व के कारण परिवर्तन होता है और वाक्य स्तर पर अन्य भाषाओं का प्रभाव, परिवेश में परिवर्तन, अभिव्यक्ति की स्पष्टता के लिए आग्रह के कारण परिवर्तन दिखाया गया है। जिससे इस लघु शोध कार्य के लिए ध्वनि–परिवर्तन में आगम, लोप, विकार, विपर्यय और विषमीकरण को लिया गया है साथ ही रूप स्तर पर संबंधतत्व और अर्थतत्व में परिवर्तन को लेकर काम किया है।

प्रथम अध्याय : मराठी भाषा और उसकी बोलियाँ

1.1 परिचय एवं भाषाई क्षेत्र

भारत के स्वतंत्र होने के पश्चात संविधान के अनुसार हर राज्य को भाषा के आधार पर विभाजित किया गया। महाराष्ट्र की स्थापना मराठी भाषा के आधार पर 1 मई 1960 में की गई। मराठी भाषा भारत में स्थित महाराष्ट्र जैसे बड़े भू-भाग की कार्यकारी भाषा है। प्राचीन समय से लेकर आज तक इस भाषा पर अनेक विद्वानों ने विचार व्यक्त किए हैं । मराठी तथा अन्य भाषा के विद्वानों ने वऱ्हाडी भाषा को राज्यशास्त्र, अर्थशास्त्र, सामाजिकशास्त्र, विज्ञान, साहित्य आदि में अपने ग्रंथों तथा शोध के माध्यम से ऊँचा स्थान दिया है। भारत वर्ष में जो भिन्न-भिन्न भाषाएँ प्रचलित हैं, उनमें मराठी का स्थान दूसरा है। मराठी भाषा हिंदी की तरह देवनागरी लिपि में लिखी जाती है। मराठी भाषा और हिंदी एक ही भाषा परिवार के हैं इसीलिए इन दोनों में सादृश्यता अधिक है।

भाषा समाज की संस्कृति का महत्वपूर्ण अंग होती है और दोनों का विकास परस्पर निर्भर होता है। भारत में हजारों वर्षों से जन जीवन की जो धारा प्रवाहित है उसकी विभिन्न रूपों में एक सामाजिक संस्कृति है और उसी संस्कृति के साथ भारतीय भाषाओं का विकास हुआ। भारोपीय परिवार की मराठी भारत के पश्चिम में स्थित महाराष्ट्र राज्य की आधिकारिक सरकारी कामकाज (प्रशासन) की भाषा है। मराठी भाषा को महाराष्ट्री, मल्हाटी और महट्टी के नाम से भी जाना जाता है। इससे स्पष्ट हो जाता है कि मराठी भाषा में शब्द के भी विभिन्न रूप देखने को मिलती है। भारत में बहुत सारी भाषाएँ बोली जाती हैं। इन भाषाओं में मराठी के योगदान को हम निम्न कथन के आधार पर समझ सकते हैं। भारतीय संविधान में मान्य 22 भाषाओं में मराठी भाषा को भी स्थान मिला है। भाषाई परिवार के स्तर पर यह एक आर्य भाषा है। जिसका विकास संस्कृत और अपभ्रंश से हुआ। मराठी भारत की प्रमुख भाषाओं में से एक है। यह महाराष्ट्र और गोवा की राजभाषा है। मातृभाषियों की संख्या के आधार पर मराठी विश्व में पंद्रहवें और भारत में चौथे स्थान पर है। इसे बोलने वालों की संख्या लगभग 9 करोड़ है। यह भाषा 1300 वर्षों से प्रचलन में है। यह भी हिंदी के समान संस्कृत पर आधारित है।

मराठी भाषा भारत के अतिरिक्त मॉरीशस और इस्राइल में भी मराठी मूल के लोगों द्वारा बोली जाती है। इनके अतिरिक्त अन्य देश भी हैं, जहाँ मराठी मूल के लोग निवास करते हैं और इस भाषा का उपयोग करते हैं जिनमें प्रमुख हैं- अमेरिका, सिंगापुर, जर्मनी, सयुंक्त अरब अमीरात, अफ्रीका, ब्रिटेन, ऑस्ट्रेलिया, वेस्टइंडीज और न्यूजीलैन्ड।

भारत में मराठी मुख्यत: महाराष्ट्र में बोली जाती है। इसके अतिरिक्त यह गोवा, कर्नाटक, गुजरात, आंध्रप्रदेश, मध्यप्रदेश, तमिलनाडु और छत्तीसगढ़ में बोली जाती है। केंद्र शासित प्रदेशों में यह दमन-दीव, दादर और नगर हवेली में बोली जाती है। इससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि धीरे-धीरे यह भाषा अब अपने विकास की ओर बढ़ रही है। प्राचीन समय में मराठी का प्रयोग करने वाले तथा मराठी भाषा का समुदाय अलग था। “आज जिसको महाराष्ट्र प्रदेश कहते हैं उसमें प्राचीन काल में ‘नाग’ और ‘महाराष्ट्रिक’ नामक दो भिन्न समुदाय के लोग रहते थे। नागों की भाषा, वैदिक अपभ्रंश थी और ‘महाराष्ट्रिक’ लोग अपभ्रंश भाषा बोलते थे। महाराष्ट्रिक अपभ्रंश से ही आज की मराठी का जन्म हुआ। इस विवेचन से स्पष्ट हो जाता है मराठी भाषा का उद्भव अपभ्रंश से हुआ है, जिससे नाग समुदाय जुड़े हुए थे।

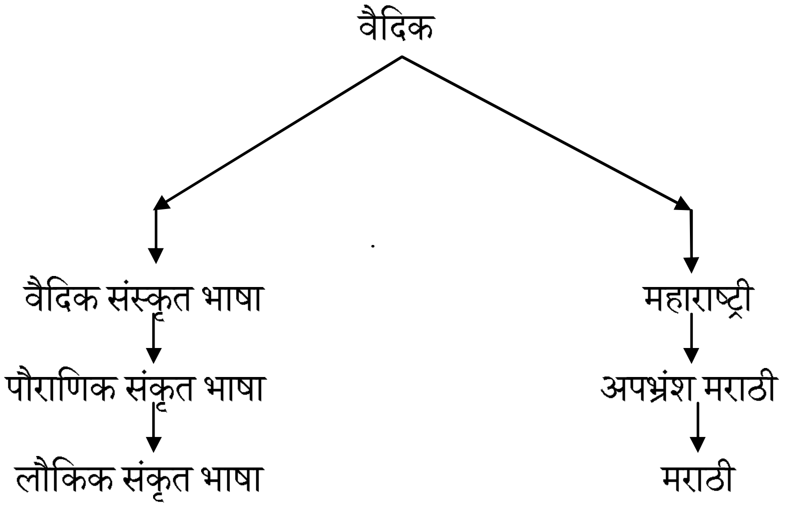

इस आरेख द्वारा स्पष्ट हो जाता है कि महाराष्ट्री अपभ्रंश से ही आज की वर्तमान मराठी का विकास हुआ है। “शौरसेनी बोलने वाले राष्ट्रिक, मागधी और महाराष्ट्री बोलनेवाले महाराजीत और महाराष्ट्रिक, अपभ्रंश बोलनेवाले आमिर और दैराष्ट्रिक इन सबके सम्मिश्रण से महाराष्ट्र समाज बना और प्राकृत और अपभ्रंशों से मराठी जनभाषा बनी। इस प्रकार से विद्वानों के मतानुसार मराठी के विकसित रूप को कुछ इस तरह प्रस्तुत किया जा सकता है-

महाराष्ट्री → महारट्टी → मरहट्टी → महटी → मराठी

मराठी भाषा उस समय अपनी जन्मभूमि के अलावा दूसरे प्रांतों में भी प्रतिष्ठा प्राप्त कर चुकी थी, जिसका उल्लेख राइस (rise) के ग्रंथों में मिलता है।

अंबादास देशमुख ने अपने पुस्तक में राइस के मत का उल्लेख इस प्रकार किया है। ई .स. 1290 में तमिलनाडु में मराठी भाषा पढ़ने की व्यवस्था थी। The college founded endowed in 1290 A. D. By the hoyassala Minister perumala at mallangi deserves mention- provision was made in it for master to teach nagar-kannad, telagu, and arya (Marathi) मराठी भाषा मुख्यत: वेदकाल से प्रयुक्त लोकभाषा से निर्मित भाषा मानी जाती है। मराठी भाषा को देखते हुए प्रा. हरी नरके ने भी कहा है कि – "सवा ग्यारह करोड़ लोगों की मराठी विश्व की दसवें नंबर की भाषा है। आज का पाकिस्तान, बांग्लादेश और अफगानिस्तान पर भी मराठे शाही का परचम लहराता था। दुनिया के 72 देशों में मराठी भाषा बोलने वाले लोग रहते हैं। भारत के 35 राज्यों और 7 संघशासित प्रदेशों के विभिन्न पदों पर काम कर रहे हैं। इसलिए यह किसी एक प्रांत की भाषा न होकर पूरे राष्ट्र की भाषा है"। इन सभी विद्वानों के विचारों से मराठी भाषा की व्यापकता का अंदाजा लगाया जा सकता है। इन मतों से यह बात भी सामने उभरकर आई है कि सभी विद्वानों ने महाराष्ट्र में प्रयुक्त मराठी भाषा का प्रयोग करने वाले लोगों के समुदाय को तथा उसका प्रयोग अपने सीमित क्षेत्र को छोड़ दूसरे प्रांतों में किस तरह स्पष्ट किया है, साथ ही मराठी भाषा अपनी प्रतिष्ठा को प्राप्त करने मेँ किस तरह सफल रही है बताया है।

भारत के लोगों द्वारा बोली जाने वाली भाषाओं में मराठी भाषा चतुर्थ स्थान पर और विश्व में 15 वें स्थान पर है। "2001 के अनुसार मराठी बोलने वालों की संख्या लगभग 7.19 करोड़ है "। (2001 जनगणना से साभार) इससे ये बात स्पष्ट हो जाती है कि मराठी भाषा बोलने वालों की संख्या न केवल भारत में बल्कि इस भाषा को बोलने वाले लोग विश्व में भी दिखाई देते हैं।

1.2 मराठी की विभिन्न बोलियाँ

भारत की तरह महाराष्ट्र भी विविधता से सजा है। अनेक धर्म, जाति, पंथ, हर प्रकार के लोग महाराष्ट्र में हैं। विस्तीर्ण क्षेत्रफल और लोकसंख्या, अलग प्रकार की भौगोलिक परिस्थिति, अनेक प्रकार की जाति समुदाय, विभिन्न संस्कृति और विभिन्न जीवनशैली के कारण महाराष्ट्र की मातृभाषा मराठी के अनेक रूप देखने को मिलते हैं। मराठी के प्रादेशिक भाषिक रूप को उस भाग की बोली कहते हैं।

महाराष्ट्र राज्य में प्रमुख 6 प्रशासकीय विभाग हैं जिनमें पुणे, नाशिक, कोंकण, औरंगाबाद, अमरावती, एवं नागपुर हैं। इन 6 विभागों की भाषाई क्षेत्रों की सीमा इन क्षेत्रों में बोली जानेवाली

बोलियों के आधार पर तय की गई है। पुणे विभाग में 5 जिले आते हैं और यहाँ मानक मराठी का प्रयोग किया जाता है। इस विभाग को मध्यवर्ती या मध्य की मराठी नाम से भी जाना जाता है। नाशिक विभाग में 5 जिले आते हैं और इस विभाग में खानदेशी/अहिराणी बोली का प्रयोग किया जाता है। औरंगाबाद विभाग में 8 जिले आते हैं और यहाँ विदर्भ की वऱ्हाडी बोली का प्रयोग किया जाता है और नागपुर विभाग में 6 जिले आते हैं जिसमें विदर्भ की नागपुरी एवं झाड़ी बोली का प्रयोग किया जाता है। उपर्युक्त विवेचन को निम्न तालिका के आधार पर दर्शाया जा सकता है

विभाग	**जिला**	**क्षेत्रीय बोली**
कोंकण	मुंबई, मुंबई उपनगर, ठाणे रायगढ़ रत्नागिरी एवं सिंधुदुर्ग	कोंकणी बोली
पुणे	पुणे, सतारा, सांगली, सोलापुर और कोल्हापुर	मानक मराठी
नाशिक	नाशिक, धुले, जलगाँव, अहमदनगर नंदुरबार	खानदेशी/ अहिरणी बोली
औरंगाबाद	औरंगाबाद, जालना, लातूर, नांदेड़, उस्मानाबाद, परभणी, हिंगोली और बीड	मराठवाडी बोली
अमरावती	अमरावती, अकोला, बुलढाणा, वाशिम और यवतमाल	वऱ्हाडी बोली
नागपुर	नागपुर, चंद्रपुर, वर्धा, भंडारा, गोंदिया और गड़चिरौली	नागपुरी एवं झाड़ी बोली